भारतजनताऽहम्

माड्यूल 2 /2

प्रस्तुतकर्ता-

रविकुमार जैन
प्र.स्ना.अध्यापक
(चयनमान)
हिंदी/संस्कृत
प.ऊ.के.वि.इंदौर

उत्सवप्रियाऽहं श्रमप्रिया, पदयात्रा-देशाटन-प्रिया।
लोकक्रीडासक्ता वर्धेऽतिथिदेवा, भारतजनताऽहम्॥

शब्दार्थ - उत्सवप्रिया-उत्सवों से प्रेम करने वाली, श्रमप्रिया-मेहनत से प्रेम करने वाली, देशाटन-प्रिया-देश के भ्रमण से प्रेम करने वाली,लोकक्रीडासक्ता -जनता के खेलों पर आकर्षित होने वाली अतिथिदेवा-अतिथि को देवता की तरह मानने वाली।

सरलार्थ:-मैं उत्सवों से प्रेम करने वाली, परिश्रम (मेहनत) से प्रेम करने वाली, पद (पैदल) यात्राओं तथा देश में भ्रमण से प्रेम करने वाली हूँ,मैं लोक के खेलों पर मोहित होने वाली , अतिथियों को देवता की तरह समझने वाली भारत की जनता हूँ।

मैत्री मे सहजा प्रकृतिरस्ति, नो दुर्बलतायाः पर्यायः।
मित्रस्य चक्षुषा संसार, पश्यन्ती भारतजनताऽहम्॥

शब्दार्थ - मैत्री-मित्रता, मे-मेरी, सहजा-सामान्य, नः (न)-नहीं, दुर्बलतायाः-कमजोरी का ,पर्यायः-पर्यायवाची (दूसरा नाम), मित्रस्य-मित्र की,चक्षुषा-आँखों से,संसाराम्-संसार को,पश्यन्ती-देखती हुई (देखने वाली) ।

सरलार्थ-मित्रता मेरी सामान्य आदत (स्वभाव) है, यह मेरी दुर्बलता (कमज़ोरी) का पर्याय नहीं है,मैं मित्र की दृष्टि से संसार को देखती हुई भारत की जानता हूँ।

विश्वस्मिन् जगति गताहमस्मि,विश्वस्मिन् जगति सदा दृश्ते।
विश्वस्मिन् जगाति करोमि कर्म, कर्मण्या भारतजनताऽहम्॥

शब्दार्थ- विश्वस्मिन्-सारे , जगति-संसार में , गता-गई हुई।
सदा-हमेशा। दृश्ये-देखती हूँ। कर्म-काम को। करोमि-करती हूँ।
कर्मण्या-कर्म से युक्त (कर्मशील)।

सरलार्थः-मैं इस सम्पूर्ण विश्व में गई हुई हूँ, मैं इसे सम्पूर्ण विश्व को सदा देखती हूँ। मैं इस सम्पूर्ण विश्व में कार्य (कर्म) करती हूँ, मैं कर्मशील (कार्य करने वाली) भारत की जनता हूँ।